

दुर्मयकांथं कर्कतनमामिगुह्यं। पलकोक्तुविद्याकृतं नावकावर्मनातिहृतं। वलदंजीवजागीर्जदेचिं। रणमर्दनी। विद्वधका
 नर्कमेकं। शांतीसोखायदायकं। निषेकानलिं। गनि। शुद्धिमानान्यतथानी॥ ॥ द्विविधं नमस्ते। लिभं। निमित्तं वायुनिमित्ती। कर्कतं। रिध
 दृग्यिच। तस्मिन्निमित्तं। स्मृती। सा। रा। वा। क्ति। वि। उं। क्ये। उल्लङ्घ्याय। निमित्ती। तस्यै। ना। ज। रि। य। ना। डु। कि। मु। किं। थि। रि। ४। सदा॥ ॥ यज्जि। द्वा। नि। ती। नो। दे
 शू। ला। री। चि। पि। ट। कं। शी। उ। द्वा। धा। व। द। नं। दी। ध। म। ध। ४। कूल। ३। नि। य। रं॥ ॥ मि। ध। व। क्कं। न। थ। य। डं। ख। डं। द। वा। य। उ। क। कं। किं। नं। स। डं। टि। गं। य। श। लं। चि। री। म
 ना। धि। ती॥ ॥ ति। र्थ। क्वा। ध। ४। कं। री। य। रू। धं। नी। म। ध। वि। व। डं। य। रं। ना। डु। लं। उ। न। थ। म। ध। न। मि। गं। सु। गा। नि। पि॥ ॥ गं। स्यं। या। ना। व। ला। वं। की। रू। र्थं। नि। ध्रु। किं। ना। नि। व
 नां। गं। य। ना। ज। या। द्वां। उ। ल। धं। धं। क। ति। न। क। थ। ॥ ॥ य। वा। सी। द्वां। ख। दा। नि। डी। मृ। र्थं। द। या। क्क। मा। रू। णं। गं। स्या। द्वां। धे। वि। नि। म। र्कं। दृ। ट। सि। धं। प। रा। चि। री। म। म।
 सु। डं। ल। प। र्थं। कं। श। म्। रू। ४। स्यं। नी। किं। नी। म। हा। न। लं। म। हा। मृ। ली। उ। वा। य। कं। जं। यं। सदा॥ ॥ गं। स्या। द्वां। ना। डं। यं। ध। म। किं। ना। नां। धं। वि। यं। नां। ४। शि। यं। ४। स्यं। प। ना। धाः
 गं। म। ध। यं। रं। व। यं। नं। यं। ना। धि। री॥ ॥ म। हा। व। लां। म। हा। सि। धिं। ४। श। डं। श। डं। पि। जा। यं। नी। ती। यी। नी। सि। री। वा। पि। श। कं। न। धं। न। नि। मि। ती॥ ॥ ज। लं। वा। रं। वि। धिः

३

दि २ ५४

दा। म्। नु। का। क्क। द। व। नां। शां। त्वं। रू। टि। कं। शी। कां। ण। रं। वा। न। म्। हा। द। लं। यं। ति। ४॥ ॥ नि। डा। न। स्यं। उ। लं। यं। शं। गं। व। श्चि। सी। नि। रू। ४। धे। नां। स्यां। रा। द्वि। जा। नी। नां
 नृ। पा। र्थं। पी। नं। नृ। कं। की॥ ॥ वे। ण्यं। रु। नि। रा। यी। गो। च। धू। म्। नं। उ। च। उ। र्थं। कं॥ ॥ शू। लं। वा। धं। कं। नां। य। स्यं। व। डं। स्या। रू। द्वि। वा। ल्म। की। गं। लिं। गं। मा। यं। धां। च। च्छे। स्र्चं। नां। ग
 बि। नां। शं। नं॥ ॥ ॥ मि। रा। नं। कं। क्क। मा। सी। नी। रू। धं। व। रू। टि। कं। शी। री। गं। जा। नि। व। लं। मि। शां। क्कं। व। डं। वि। न्म। री॥ ॥ नि। म्। नं। डं। धं। धं। धं। रं। गं। जा। व। सी। द
 नि। मं। ली। शं। नं। दं। म्। नि। री। च्छे। कं। सिं। धं। व। रू। टि। कं। शी। री॥ ॥ विं। विं। धं। चिं। रं। नृ। कं। रू। टि। गं। रिं। नं। व। लुं। के। सगं। रं। मृ। मिं। से। यं। की। शं। ति। म्। की। यं। न। लं। जं। ॥ ॥ सु। वः
 गं। की। लं। का। यं। रं। शू। लां। रं। च। कं। व। जिं। री॥ ॥ कूलं। दी। धं। कं। शी। डं। खं। म। धं। नं। कं। धीं। धं। वा। कं। ॥ ॥ उ। घां। ना। कं। ति। न्दु। र्थं। कं। रू। किं। कां। रिं। पं। यं। नि। री॥ ॥ यं। न। जा। ति। वि। लं। गं
 च। विं। धं। री। ति। कं। नं। यं। जं। ॥ ॥ ससं। मं। मानं। सी। यं। की। शं। म्। लं। कं। गं। लं। किं। री॥ ॥ रू। टि। कं। लिं। गं। मि। धं। र्थं। मृ। र्थं। जिं। कां। मं। दी। यं। जं। ॥ ॥ स्र्चं। लं। कं। गं। सी। यं। की। स्व
 ल्यं। दां। धं। कं। विं। न्म। री॥ ॥ लिं। गं। सदां। विं। रां। रीं। पू। जं। नां। दां। कं। नृ। णं॥ ॥ वां। नं। कं। रं। वं। दां। शीं। मृ। द्वां। सीं। मृ। दिं। वं। मं। नां। कं। सदां। निं। धं। नं। सिं। धिं। स्यां। द्वां। ड

७४

दि २

चासमसमा ॥ अथ सर्वसमं ॥ यवमध्वं वलयदीनल्लिङ्गं दिक्काङ्गं सपीठं धातुपीठं ॥ धातुर्जगत्त्रयानिर्क, सिद्धिमक्षिपदाय
कीचनं लिङ्गं दिक्काकार्यं धातुनल्लमयं धरं ॥ हमादिचल्लिङ्गं दहल्लदिगिपंचकी ॥ रुडनल्लमयं धरं यमानाधननल्लं ॥ ति
थनमयजानीनां नृपाणां यावदिन्द्रकी ॥ वध्वनामनमथनं स्यात्कुडधं द्वादशवधि ॥ यकादीनां कविर्लिङ्गं विकानादः
कविर्गतिः ॥ चल्लगद्वयदवानां उयाविर्गतिः कालुली ॥ वध्वं पूजयदगन्तुमयकक्किवानागधध्वल्लखदुसल्लायिकनादि
नमसीमर्क ॥ अथकीनवदहल्लकु, वकीयध्वदहल्लथा ॥ धद्वं मिश्रकीलिङ्गं नाध्वं वक्किनमिध्वग ॥ नवदहल्लरवक्केलं गिरुल्ल
लारुज्जकविर्ग ॥ धद्वं हल्लानाधिकवाक्किपार्थिवं लवसुजा ॥ अहल्लानवदहल्लस्यादगन्तिमं उमानर्थ ॥ यकनाकासुनवाल
गन्धवापुनसीकविर्ग ॥ किन्ननाध्वं सिद्धानां हल्लान्यवदहल्लपनिधमहाकुर्याद्यो ॥ दवानां मकविर्गतिः ॥ गिरुल्लकी
४

इह ३

५१

५१

नृन ३

दाध २

नृन २

दाध ३

ध २

दीयावत्तार्द्धगंधरवादिदीयध्वल्ललुयेध्वल्ललुल्लखपमानगध ॥ गन्धसोराग्यदलिङ्गं येध्वीरुकिपदायक ॥ कलिलम ॥ उल्ल
पूजं स्यादोकासापनादिक ॥ ॥ नकाध्वीरुकिपदायक ॥ यध्वं कसिद्धिमिच्छतां ॥ यध्वमानय दध्वं गन्धसोराग्यदलिङ्गं ॥ कर्म
कासिगसीजारी ॥ नृध्वं पातालसिद्धिदी ॥ अग्निमादिन्द्रकी ॥ लोकाध्वं मन्त्रान्यध्वं दध्वं गध ॥ यध्वं नृध्वं यकानां विस्त्रवीकं ध्वकजाजिउ ॥ ध
लियिध्वं रुवीयध्वं साध्वीकं वध्विवध्वनं ॥ गन्धध्वं वागनागध्वं यध्वं वल्लसोखदी ॥ निपूरुदकनं मोडं ॥ उदीयामाकसीरुवं ॥ गिलपिध्वं
धनादायि ॥ ससोद्धर्धिरयनाध्वनं ॥ अन्नामाय ॥ ॥ पदं ॥ यध्वं गन्धध्वं यध्विवध्वनं ॥ नानाहल्लारुवं लिङ्गं जानाकसिद्धदायक ॥ यध्वं दध्वं
करीरुनिध्वं सोराग्ययलावर्ग ॥ उच्चोत्तं यध्वं गन्धध्वं यध्विवध्वनं ॥ यध्वं वल्लसोखदी ॥ निपूरुदकनं मोडं ॥ उदीयामाकसीरुवं ॥ गिलपिध्वं
नामं यध्वं कानकी ॥ गन्धध्वं यध्वं दध्वं ससोद्धर्धिरयनाध्वनं ॥ अन्नामाय ॥ ॥ पदं ॥ यध्वं गन्धध्वं यध्विवध्वनं ॥ नानाहल्लारुवं लिङ्गं जानाकसिद्धदायक ॥ यध्वं दध्वं
५१

३ सखक नावमीर्गु ॥ गन्धध्वं यध्वं नानाध्वनी

चनानिना। गान्धकासंनुसंधूय गानि विमर्शकक्रियत॥ पिबामगर्कनासुक्रां पक्वां चिन्तां श्रुतिशक्तिगो। निष्कायपटमालया सौम्य
 अपनिमाश्रित॥ खटिकालककासुष्ठु जीलीदनदककुलेशधुविल्वनसेनखी। रिधालिङ्गपटादिक॥ मधुनारिगुलखच। कार्यावेसम
 सन्धिका। वल्लभसुन्दरीकाया। सुखितावाधिनासदा॥ गंगानवीनरत्नसुन्दरीकाया। रयानकाशकनकाशुगर्गनाश्वनवरावात्मिका
 कविता॥ पञ्जात्रिगुजाठ्ठासम्यक्कुरुविधानगशैलकुर्यायुजये। दत्तमन्मयायुचर। धन॥ ॥ अपक्वपक्वार्जकार्या मुख्या
 मख्यवस्तुका। सधामनुषावापक्वकमानवकवादिर्क॥ यश्चिरुहिककुर्याद्यो नमन्। विनोदनी। विजागिजातिरिम्भुहिनय
 कादिचकामगशा। पद्मिनीपूजनी। नवकसुलचमृष्टिका॥ वापीकूपनग। गवदीर्घिकाया॥ समारुचन॥ समर्द्धितमृदाकार्येक
 मृत्समृद्धसदा। यश्चिरिलारुगरुश्च धनकायसमृद्धय॥ उच्यते लाघवसंग्रहस्य। जागमनुविता। वामाश्विनविनीधु। लाघावनेय

कृ ४

न

कृ १

पर

कृ १

वि ४

कृ १

कृ १

नदाश्रव॥ लिङ्गं निताग्निनामये यन्मूषनोवलाकचा॥ गीष्मननगृहीत्वा। ततः संकृत्य पूजयत॥ यश्चिन्तिष्वपानीयं विलम्बजा
 रुल्लयं। सूर्यदिग्भुपूजनाहो। मतसीरोलमवच॥ सनधीवास। गधूमयवमाषातसीनउ॥ मदि किष्वावावस्तुका। सामन्नापनिमे
 यत्र॥ अक्षिप्तमृदुललहनादान्। गमगगर्गत्वं। विनोदकर्मन्मर्यादयकृत्॥ किष्वाभासोपधानत्। लोहवीर्ये। वायकमीप्रेरित
 घामर्तविरु। नसुन्दरकसीयर्ग॥ सपिष्टकैनेका। नदधितामिगुणविनीश। गद्यसङ्कयगे। एवलेयवर्तुकपूरकै॥ ॥ वनानकानन
 गच्छेदा। नूपलण्टहीगय। सन्धानकैर्युक्तदि। वानलग्नसमचिन्ता॥ गदागमनकाले। गङ्गानान्यथलकयत। दिव्यान्निर्धोरोमानिः
 श्रुताश्रुतरुलापेय॥ रूपसन्नमनूदत्तमादियाकृष्णायरी॥ र्यादिश्रुतकदिवमत। श्रुतकर्मस्त्रिद॥ उक्तापागा। शानिकाना। पतनीक
 उस्मृवश। दिग्दारुलीखवागध्व। उन्दसूर्यापमदनी॥ अकस्मात्तगनगद्य॥ पचति॥ रुलपूषया॥ वासवकामसीकायि। वलिउद्गधना

नो प्रह्लादवतः शत्रु। धागतग्नसुवासन ३

कृ ३

三

५१३

मिमांसा

द्वि २

बावमावादि काल क्ला. शुद्धि द व य व द का ४५

ज्ञानां ज्ञानिसमादनीयथा। शूद्रादीनां गथा मले हीनानां शेषता रवता। गामादीनां गथा मले सिद्ध्या नदया गतः। गथेवमनुसीया गमचा
 उर्वरुः ४ निघोरवता। नगनी नि अनायका गमां यायेक गीयथा। दीकाया गम रुथ गत्य शूद्रा दिगिवरा खरुत् ॥ दीकाता मय गत ददी तिष्ठन्
 कापि विग्रह यथा कलालवक्त्रकाः विचित्रे मर गद्य ॥ सकर्मव च नेर्वैधे येन नात्मा मनस्यतः ॥ मली विषमदय द्र दः ॥ विवेक मनु गतः ॥
 यके क लूषिगीतार्ययट हं निमेलीयंथा। स्यात्कटक रुलेयो म रु द्रमले सुमानव ॥ कर्षक कर्षय द्र दः ॥ मका सामययथा गथेवमनु
 सामथ मलीहत्या निवीरवता। यथार्क के सीया गम द्विन्त्य गम ॥ गत (थ गम रु सीया गम द्वि वत्त जाय गत पत्ता ॥ निव गम रु सामका मनु ॥ निव
 गकि रि नखि गा ॥ नेवाचार्या ॥ यय क कि विवत्त सव नाचन ॥ यथ मद्र ललारु नि मले ग क कि दवता ॥ आचार्य पि गथे वार निवत्त या ति मनु
 विग ॥ मरु ग ल वि नाय दा ॥ मनु ॥ सा का नम रु ध्वन ॥ सै किय क हि मले ॥ दवाचार्या मय खि न ॥ दार्ध्व मला रु मद्रु ज्ञान लिं गे ति छिरी।

२३

३३

संय को ३ या

यथा पूरु मवद रूत थ म रु पि दानिक ॥ मृदा दिख रूता गानां निवत्त यय क कि ति। निव ४ ख म वरु ना न्य नू पं क दा चन ॥ सय द रु
 यथ म रु का म रु अला क द्वि जा दय ॥ मरु या गम द्वि वृक्ष क न रु निवत्त थ निव ॥ क लु म नाय थ पानं द्वि जा दी नय ति रु ना ग ॥ नेवाचार्या
 यय नै काने त द रु काने नो क या ॥ ॥ चरु दिवा द सा रु से ४ रु ग सी धि ४ गती गथा ॥ ण य के लं करु नि ४ या ल रु म व ग र कि मा ॥
 चरु यु ग रु वा क दि न म कं स जाय ग ॥ पिता म रु गती या व वि भ्रामा वि धी यत ॥ च रु य नि मिषा क न स रु सा नि च रु द न ॥ वि न ध्व नि
 त ल्प म रु अ सै खा गा ४ पिता म रु ॥ ॥ ॥ वा स नै क न की य क व रु वा रु ना ॥ स दं रा नि मिषा ना ॥ ल य या ति न सै रा य ॥ खि क्क या य न
 रु द्वा रु सै खा रु ली य ता नि वा ल्य न र न ना कि ॥ ति ग म रु नि ध्व य ॥ न व मान वि ण ये रु म रु वी य रु ता द्वा ॥ ग म रु दि वा दि ता म रु ४ सि
 छि म रु क रु ल प द ॥ वा गी ॥ ज न नी य या क म वा यी पि ता नि व ४ म रु ४ नि वी य रु ता ॥ स म रु द सा क थ य न ॥ म रु वा नी य टा दी नां सै क

दा ३

नानमुदायथायविषादिकमदानमरिषिकाधननिर्गर्वहनरुत्वादीकान्यापतिनात्रोपवसूटीगथेवदीकामलाभांमत्याकृत्यसमा
गताः। गथेवपापहर्जनं च साहर्गां न ज्ञायते ॥ रुत्वादीका शिषकादौ च पुनपातिगच्छते। लाकविषादिकाचानात्रावकि नोनगान
काः। नानाभां विवर्तमानाः क्विवर्तनरुवयदि। नरुवयसूदानूनं द्विजादवादिद्विजिकाः। गस्मान्मुपमानर्त्तं निरुहन्नुपपत्ति। वि
रुषगगहाश्वनिगुप्तकैरिमरुगः॥ संस्क्रानदीका शिः संस्क्रान् शुभयदा। चनचनयपयत। निवर्तनरुत्वाद्गुर्व ॥ वायुर्वैश्वमिन्
क्षेत्रेवैश्वमिन्नुजनी। नगसिद्धसदा। नेवैश्वमिन्नुपमज्जमर्क ॥ कोपीनमस्वलायूका। जटायकायवीतिनः। शिवान्ननामकाः। सर्वे रस्माक्षव
मत्तानिगः॥ दीक्याहन्त्यदीका पूर्वदीकादिनपति ॥ विनायकायसामाना। शुभनयवमवतु ॥ नगभांरुद्वैषाः। नेवां शिवान्नसूका
॥ मरुत्वादीक्याहन्त्यदीका पूर्वदीकादिनपति ॥ विनायकायसामाना। शुभनयवमवतु ॥ नगभांरुद्वैषाः। नेवां शिवान्नसूका
॥ मरुत्वादीक्याहन्त्यदीका पूर्वदीकादिनपति ॥ विनायकायसामाना। शुभनयवमवतु ॥ नगभांरुद्वैषाः। नेवां शिवान्नसूका

स्वाचार्यदेवानां पूर्वैरेयमन्यत। लिङ्गरुदलेयका। यायसोत्रो नवधुर्व ॥ रुत्वादीका शिषकादौ च पुनपातिगच्छते। लाकविषादिकाचानात्रावकि नोनगान
काः। नानाभां विवर्तमानाः क्विवर्तनरुवयदि। नरुवयसूदानूनं द्विजादवादिद्विजिकाः। गस्मान्मुपमानर्त्तं निरुहन्नुपपत्ति। वि
रुषगगहाश्वनिगुप्तकैरिमरुगः॥ संस्क्रानदीका शिः संस्क्रान् शुभयदा। चनचनयपयत। निवर्तनरुत्वाद्गुर्व ॥ वायुर्वैश्वमिन्
क्षेत्रेवैश्वमिन्नुजनी। नगसिद्धसदा। नेवैश्वमिन्नुपमज्जमर्क ॥ कोपीनमस्वलायूका। जटायकायवीतिनः। शिवान्ननामकाः। सर्वे रस्माक्षव
मत्तानिगः॥ दीक्याहन्त्यदीका पूर्वदीकादिनपति ॥ विनायकायसामाना। शुभनयवमवतु ॥ नगभांरुद्वैषाः। नेवां शिवान्नसूका
॥ मरुत्वादीक्याहन्त्यदीका पूर्वदीकादिनपति ॥ विनायकायसामाना। शुभनयवमवतु ॥ नगभांरुद्वैषाः। नेवां शिवान्नसूका

